ऑइनवार वंश

Dr. Sandhya Kumari, Teacher,
U.M.S. Vishunpur Sumer, Nayatola, Kanti

[(१३५३ ई – १५२६ ई)]

प्रस्तावना : --

मिथिला में कर्णाट वंश के अंतिम राजा हरिसिंह देव के नेपाल पलायन के बाद जिस वंश का शासन स्थापित हुआ , उसे ऑइनवार वंश कहा गया । मिथिला में इस वंश के संस्थापक कामेश्वर ठाकुर थे । वर्तमान के पूसा फार्म के पास वैनी नाम के गाँववासी होने के कारण, कामेश्वर ठाकुर के वंश को ओएनी से ऑइनवार कहा जाने लगा, जो इनकी राजधानी भी थी । यद्यपि इसे 'सुगौना वंश' के नाम से भी जाना जाता है ।

भूमिका : --

यद्यपि मिथिला में स्थापित इस वंश का शासन आंतरिक रूप से तो स्वतंत्र था, किन्तु बाह्य स्तर पर इसे दिल्ली सल्तनत के अधीन रहना पड़ा था । समाज में भी मतभेद था । जाति के आधार पर ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र , इन चार वर्णों में समाज बटा था । वहीं सामाजिक , आर्थिक तथा धार्मिक स्तरों पर भी इनमें भिन्नता थी । समाज मे बाल-विवाह, बहु-विवाह , बेमेल-विवाह , बिकउआ , सती प्रथा जैसी कुरीतियां व्याप्त थीं ।

उत्पत्ति : --

कर्णाट वंशीय अंतिम शासक हरिसिंह द्वारा अपने मंत्री कामेश्वर ठाकुर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया और इस नवीन राजवंश की स्थापना हुई । इनके ओएनी निवासी होने के कारण इस राजवंश को " ऑइनवार वंश " नाम से उद्घोषित किया गया । इस संबंध में यह भी धारणा है की हरिसिंह देव सुगौना होते हुए नेपाल पलायन कर रहे थे और वलान नदी के तट पर तपस्यारत थे । तभी उनकी मुलाकात कामेश्वर ठाकुर से हुई और उन्होंने मिथिला का राज्य इन्हें सौंप दिया ।

राज्य प्राप्ति के पश्चात कामेश्वर ठाकुर ने अपने जन्मभूमि वैनी में अपनी राजधानी स्थापित कर राज करना प्रारंभ किया । कतिपय वर्षों से जो मिथिला का राज अंधकार में था, वह अब विधिवत रूप से संचालित होने लगा । इसके वंशज ब्राह्मण थे जिसमें कामेश्वर ठाकुर, हरिसिंह देव, शिवसिंह, कीर्ति सिंह, भव सिंह आदि थे । इसी राजवंश के राजकवि विद्यापति हुए, जिन्होंने समय-समय पर अपनी रचनाओं द्वारा, न केवल उस समय के वर्तमान राजाओं का मनोबल बढ़ाया, उनकी प्रशंसा ही की, अपितु अपनी रचना के रूप में इतिहास को वह धरोहर दिया, जिससे आने वाली पीढ़ी इस राजवंश के विषय में विशद् ज्ञान प्राप्त कर सके ।

किसी समय विशेष में इसकी राजधानी को वर्तमान जिला मुजफ्फरपुर के ओएनी से मधुबनी जिले के सुगौना गाँव में ले जाया गया , जिससे इस राजवंश को सुगौना राजवंश के नाम से भी जाना जाता है । इस राजवंश में बीस से अधिक राजा हुए । राजवंशी अक्सर अपनी राजधानी को स्थानान्तरित करते रहते थे । 'ओएनी' से इसे 'सुगौना' ले जाया गया । फिर देव सिंह के शासनकाल में देवकुली (देकुली) को राजधानी बनाया गया , जहां शिव सिंह का भी शासन रहा ।

कामेश्वर ठाकुर के दो पुत्र थे – भोगीश्वर ठाकुर और भवेश ठाकुर । कामेश्वर ठाकुर के उत्तराधिकारी भोगीश्वर हुए जिन्होंने राय की पदवी धारण की । इनके संबंध मे कहा जाता है की यह सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के परम मित्र थे और इन्होंने लगभग ३३ वर्षों तक शासन किया । कीर्ति लता के पद संख्या २४ में इनके संबंध मे लिखा है कि - 'कामेश्वर के पुत्र

भोगीश्वर हुए जो भोग मे इन्द्र के समान , तेज मे अग्नि के समान और सौन्दर्य मे कामदेव के समान थे। सुल्तान इन्हे अपना मित्र कहकर सम्मान देते थे। वे अपने प्रताप, दान, सम्मान और गुण से सबको अपने वश मे रखते थे।

तत्पश्चात इनके अनुज भवसिंह एवं पुत्र गणेश्वर सिंह के बीच सत्ता का संघर्ष हुआ, जिसमे काफी मशक्कत के बाद गणेश्वर सत्तासीन हुए लेकिन आंतरिक कलह एवं संघर्ष के परिणाम स्वरूप इनकी हत्या हो गई। इसके पश्चात कीर्ति सिंह, भवसिंह, देवसिंह शिवसिंह इत्यादि क्रमशः सिंहासन पर बैठे।

राजा देवसिंह ने १३६४ ई मे सत्ता की बागडोर अपने हाथों मे ली और १४०३ ई(३९ वर्षों) तक शासन किया। इन्होंने विभिन्न प्रकार के विकासात्मक कार्य किए, पोखरा खुदवाए, सड़क का निर्माण कराया। इनके आदेश से ही विद्यापति ने भू-परिक्रमा की रचना की। इनके दो पुत्र थे, शिवसिंह और पद्म सिंह, जिसमे शिव सिंह बड़े थे और गद्दी संभाली।

राजा शिवसिंह एक स्वतंत्र मनोवृति के व्यक्ति थे।सबसे पहले उन्होंने सुल्तान को 'कर' देना बंद कर दिया। अपनी राजधानी को 'देवकूली' से हटाकर 'व्याघ्रमुख' मे स्थापित किया। डॉ उपेन्द्र ठाकुर के अनुसार राजा शिवसिंह केवल ३ वर्ष ९ महीने ही शासन कर पाए। सुल्तान द्वारा उन्हे गिरफ्तार कर दिल्ली लाया गया। इनके संबंध मे कहा जाता है की यह एक महान योद्धा, प्रजाहित चिंतक एवं धर्म पारायण राजा थे। इनकी ख्याति सर्वविदित है। दरभंगा मे बागमती किनारे इन्होने किला बनवाया था जिसे लोग आज भी किलाघाट के नाम से जानते है। कविवर विद्यापति ने इनके ऐश्वर्य और सौन्दर्य का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है -

विद्यापति कवि गाओलरे, आवि मिलव पिया तोर।

लखिमा देहवर नागर रे, शए शिव सिंह नहीं भौरे।।

भनई विद्यापति अरे रे कमलमुखि, गुनगाहक पिया तोरा।

राजा शिव सिंह रूप नारायण, सहजे एको नहि मोरा।।

१४१६ ई मे जौनपुर के सुल्तान इब्राहीम साह की सेना ग्यासवेग के नेतृत्व मे मिथिला पर चढ़ाई कर दी। दूरदर्शी महाराज शिवसिंह ने मित्रवत कविवर विद्यापति के संरक्षण मे अपने परिवार को नेपाल की तराई मे स्थित राजबनौली के राजा पुरादित्य गिरिनारायण के पास भेज दिया। स्वयं भीषण संग्राम मे कूद पड़े। मिथिला की धरती खून से लाल हो गया। राजा शिव सिंह का कुछ पता नहीं चल पाया। शिव सिंह की मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी लखिमा देवी ने १२ वर्षों तक इस वंश के शासन को संभाला। शिवसिंह की तरह ही लखिमा देवी को भी विद्यापति का संरक्षण प्राप्त था। यद्यपि इनके सत्तारोहण के संबंध मे विद्यापति ने कुछ खास नहीं लिखा है, तथापि विद्यापति के साथ लखिमा देवी सुल्तान से सनद प्राप्त कर सत्तासीन हुई थी।

इनके बाद पद्मसिंह [१४७५-१४७५ ई] ने २० वर्षों तक मिथिला राज्य का शासन संभालते हुए संसार से विदा हुए। उनकी पत्नी विश्वास देवी ने [१४७५ -१४८३ ई] ८ वर्षों तक राज्य संभाला। विद्यापति कृत पुस्तक 'शैव सर्वस्य सार' से ज्ञात होता है की विश्वास देवी के शासन काल मे कोई विशेष घटना नहीं घटी थी। यद्यपि इन्होंने अपने नाम पर 'वसौली' ग्राम आबाद कर अपनी राजधानी बनाई। ऑइनवार वंश की यह दूसरी महत्वपूर्ण महिला थी जो सिंघासनारूढ़ हुई थी। कुछ विद्वानों के अनुसार, विकलांग होने के कारण स्वयं पद्मसिंह ने इन्हे सिंघासनारूढ़ किया था। इनमे डॉ सुकुमार सेन तथा डॉ विमान बिहारी मजूमदार प्रमुख है। शिवनंदन ठाकुर का विचार है कि इन्होंने १२ वर्षों तक शासन को संभाला। इनके संबंध मे यह कहा जाता है कि ये न्याय एवं राजनीति संबंधी ज्ञान के लिए विख्यात थी। इन्होंने 'विश्वयाबा' नामक 'तड़ाग' खुदवाकर चारों ओर सुंदर बगीचा लगवाया था। इनके निःसंतान होने के कारण भवसिंह की तृतीया पत्नी के पुत्र हरिसिंह राजा हुए।

हरिसिंह देव के संबंध मे विद्यापति के दान वाक्यावलि, दुर्गाभक्ति तरंगिणी से ज्ञात होता है कि ये यशस्वी और पराक्रमी राजा थे। इनके बाद नरसिंह देव हुए जिनकी आज्ञा से विद्यापति ने विभागसागर की रचना की। धीर सिंह, भैरव सिंह, राम भद्र सिंह सहित अनेक राजा हुए जिन्होंने मिथिला के इस 'ऑइनवार' वंश' को चलाया, जिसमे राजा शिवसिंह और उनके दरबारी कवि विद्यापति के काल को इस वंश का 'स्वर्णकाल' कहा जाता है।

'ऑइनवार वंश' की सेना को राज्य का प्रमुख माना जा सकता है। जिसमे सेनापति के हाथों मे कमान होती थी जिसमे घुड़सवार सेना, पैदल सेना इत्यादि द्वारा सुरक्षा सुनिश्चित किया जाता था।

प्रशासन की दृष्टि से शासन की इकाई गाँव था। गाँव के स्वामी को गुल्म कहा जाता था। गाँव के मुखिया को ग्रामाधिपति कहा जाता था। १० गाँव के अधिपति को दशग्रामाधिपति, २० गाँव के अधिपति को विशतीश इत्यादि कहा जाता था।

कविवर विद्यापति की रचनाओं द्वारा इस वंश और इसके कालखंडों की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आदि विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। यह मूलतः 'ऑइनवार वंश' के ही राजकवि थे। इन्होंने अपनी रचना कीर्तिलता, पुरुष परीक्षा, कीर्तिपताका, आदि मे इस वंश के राजाओं का विशद चित्रण किया है। विभागसार पूर्णतः सम्पत्ती के बंटवारे से संबंधित रचना है। पूर्वकाल की तरह इस वंश के शासनकाल मे भी धर्म का भी स्पष्ट प्रभाव दिखता है। इस वंश के सभी शासकों के कालखंडों के संबंध मे इतिहासकारों मे मतभेद है। यद्यपि प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार इन शासकों का क्रमबद्ध वर्णन निम्नलिखित है -

१. कामेश्वर ठाकुर (संस्थापक)
२. भोगीश्वर ठाकुर (१३५४ ई-१३६० ई)
३. ज्ञानेश्वर ठाकुर (१३६० ई-१३७१ ई)
४. कीर्ति सिंह (१४०२ ई-१४१० ई)
५. भव सिंह (१४१० ई)
६. देव सिंह (१४१० ई-१४१३ ई)
७. शिव सिंह (१४१३ ई-१४१६ ई)
८. लखिमा देवी (१४१६ ई-१४२८ ई)
९. पद्म सिंह(१४२८ ई-१४३० ई)
१०. विश्वास देवी (१४३० ई-१४४२ ई)
११. हरि सिंह (१४४३ ई-१४४४ ई)
१२. नर सिंह (१४४४ ई-१४६० ई)
१३. धीर सिंह (१४६० ई-१४६२ ई)
१४. भैरव सिंह (१४६२ ई-१४८० ई)
१५. राम भद्र सिंह (१४८० ई-१५१० ई)
१६. लक्ष्मी नाथ सिंह (१५१० ई-१५२६ ई)

इसके पश्चात बाबर द्वारा १५२६ ई में मुग़ल वंश की स्थापना के साथ ही इस ब्राह्मण वंश का अंत हुआ और फिर मिथिला मे दरभंगा महाराज का शासनकाल आरंभ हुआ।

<u>संदर्भ - सूची :--</u>

१. राधाकृष्ण चौधरी , "मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति" , पृष्ठ ७४-८०।
२. माखन झा , "ऐन्थ्रोपोलौजी ऑफ ऐन्शन्ट हिन्दू किंगडम्स: अ स्टडी इन सीविलाइजेसनल पर्स्पेक्टिव" (१९९७), एम. डी. पब्लिकेशन्स , आई.एस.बी.एन. ९७८८१७५३३०३४४।
३. विजयकान्त मिश्र, "क्रोनोलॉजी ऑफ ऑइनवार डाइनस्टी ऑफ मिथिला" (१९५३)।
४. डॉ उपेन्द्र ठाकुर , "मिथिला का इतिहास"।

५. बजरंग वर्मा , “जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी” , भाग - ९ ।
६. विद्यापति , “कीर्तिलता” , प्रथम पल्लव ।
७. डॉ शिव प्रताप सिंह , विद्यापति ।
८. रास विहारी लाल दास , “मिथिला दर्पण” ।
९. पंडित जवाहरलाल नेहरू , “प्रस्तावना तथैव” ।
१०. डॉ रामधारी सिंह दिनकर , “संस्कृति के चार अध्याय’ ।
११. इंद्रकांत जा , “विद्यापति युगीन सिक्के” ।
१२. राणाउदय प्रताप सिंह , “मिथिला के पौराणिक एवं सांस्कृतिक अवधारणाएँ” ।
१३. पंडित कमलाकृष्ण स्मृति , “कृत्यरत्नाकर” ।